THE RESEARCH JOURNAL OF ENVIRONMENT, CULTURE AND DEVELOPMENT (T.R.J.E.C.D.)
A Monthly International Journal of Multidisciplinary Research, Peer Reviewed-Refereed & Impact Factor - 4.8
ISSN : 2349-3313, Vol. : 10, No. : 8, January - 2025, Conference Special Issue Hindi

पर्यावरण संरक्षण

Abha Mukherjee
Assistant Professor, Department of Political Science, Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa, Jharkhand, India

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा। पंच रचित् अधि अधम शरीरा ॥ यह चौपाई रामचरितमानस से ली गई है। इसका मतलब है कि शरीर और प्राकृति दोनों पांच तत्वों से बने हैं। यह पंच तत्व है पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझने के लिए प्राचीन काल से ही जीवन दर्शन के साथ पीरोकर रखा गया है। हड़प्पा संस्कृति हो या वैदिक संस्कृति सभी ने पर्यावरण के महत्व को समझा है। प्राचीन काल से ही पर्यावरण के संरक्षण हेतु समाज के विभिन्न वर्गों में प्रकृति पूजा का विधान रहा है। अभी भी हर समुदाय के लोग अलग–अलग रूप में इसकी पूजा करते हैं। जैसे पीपल के पेड़ में जल देना, वट वृक्ष की पूजा और कर्मा पूजा इत्यादि। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार करना है।

पर्यावरण का संबंध हमारे आस–पास चारों ओर से घिरें वातावरण से है, इसका संबंध हर उस चीज से है जिससे प्रत्येक जीव प्रभावित होते हैं। धरती, नदियां, पहाड़, आकाश, पेड़ – पौधे सब कुछ, स्पष्ट रूप से कहा जाए तो यह संपूर्ण प्रकृति ही पर्यावरण से घिरी हुई है। पर्यावरण सभी भौतिक एवं जैविक कारकों की सामूहिक इकाई है। पर्यावरण का मतलब वह परिवेश है जिसमें जीव रहते हैं। यह प्रकृति और मानव निर्मित दोनों तरह के होते हैं, पर्यावरण जीवों के जीवन को प्रभावित करता है और बनाए रखता है। हमारे जीवन के अंदर घटित होने वाले सभी घटनाएं इसी के अंतर्गत घटित होती हैं तथा मानव अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को प्रभावित करता हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पर्यावरण और जीवधारी के बीच एक अन्योनाश्रय संबंध होता है।

परिवर्तन संसार का नियम है, हम सभी जानते हैं की प्रकृति के हर पल हर क्षण परिवर्तन हो रहे हैं कुछ परिवर्तन तो इतने सूक्ष्म होते हैं कि वह दिखाई भी नहीं देते जैसे सूरज की किरणों का परिवर्तन प्राकृतिक व सांस्कृतिक वातावरण दोनों में ही परिवर्तन होते हैं कुछ धीरे–धीरे और कुछ अचानक होते हैं।

प्राकृतिक परिवर्तन जैसे भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़ आना, सुखा पड़ना, आंधी तूफान, चक्रवात आदि। इन परिवर्तन में मनुष्य का कोई भी प्रत्यक्ष सहयोग नहीं होता यह आकास्मात होते हैं और उनके विनाश का अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता।

मानव द्वारा किए गए परिवर्तनो में जंगलों को काटना, आग लगाना, कृत्रिम सिंचाई के साधनों का विकास, खनन कार्य, पृथ्वी के गर्भ से बहुमूल्य वस्तुओं को निकालना, उद्योग लगाना यह सभी मानव द्वारा अपनी सुख सुविधा और विकास के लिए किए गए परिवर्तन हैं।

पर्यावरण में जैविक और अजैविक घटक दोनों आते जैविक घटकों में सूक्ष्म जीवाणु कीड़े मकोड़े पेड़ पौधे और उनसे जुड़ी जैविक क्रियाएं आती हैं। अजैविक घटकों में चट्टानें, पर्वत, नदियां, हवा, जलवायु के तत्व आते हैं। पर्यावरण वायुमंडल, जल मंडल, स्थल मंडल और जीव मंडल से मिलकर बना है अतः हम कह सकते हैं कि वह परिवेश जिसमें जीव रहते हैं यह प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों तरह का होता है जो जीव के जीवन को प्रभावित करता है जीवन को जीवित रखता है पर्यावरण कहलाता है। आज विकासशील देश की सबसे बड़ी समस्या या चुनौती की बात करें तो पर्यावरण प्रदूषण ही है क्योंकि इसका सीधा प्रभाव जीवधारियों के स्वस्थ पर पड़ता है। परन्तु बहुत अफसोस की बात है कि जीवन का संरक्षण करने वाले का ही जीवन संकट में है। यह सब जो हमारे चारों ओर व्याप्त हैं और जिनके सहारे हम एक सुंदर व सुखद जीवन यापन कर रहे हैं इस पर्यावरण का धीरे–धीरे क्षरण हो रहा है। पर्यावरण क्षरण आज एक बहुत बड़ी समस्या बन गया है, और इसके जिम्मेदार हम मनुष्य ही हैं। हम अपने सुख सुविधा व आराम के लिए प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहे हैं। जिस जल ने हमें जीवन दिया, जिस हवा ने हमें सांसे दी आज हम उसी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

आधुनिकरण और विकास की इस दौड़ में हम प्रकृति को भूल जा रहे हैं। हर मनुष्य का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण संरक्षण की ओर ध्यान दें और इसे संवारे।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व :– प्राचीन समय से ही पर्यावरण संरक्षण का बहुत ही महत्व रहा है क्योंकि, प्राकृति को हमारे समाज में देवी स्वरूप माना जाता है। भगवान की तरह पूजा जाता है विभिन्न समुदाय के लोग भिन्न–भिन्न रूपों में इसकी पूजा करते हैं, यह एक प्रकार से प्रकृति का संरक्षण ही है। हमारे देश में पर्वत, नदी, वायु, ग्रह नक्षत्र और पेड़ पौधे यह सब कहीं ना कहीं मानव के साथ जुड़े हुए हैं। लेकिन बढ़ते विकास के कारण इसे लगातार नुकसान पहुंच रहा है। अब जो समय आ गया है इसमें अनावश्यक रूप से प्रकृति का दोहन हो रहा है, इसीलिए इसके महत्व को जानना अति अनिवार्य है।

- पर्यावरण संरक्षण वायु, जल और भूमि प्रदूषण को कम करता है।
- बायोडायवर्सिटी (जैव विविधता) की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण सुरक्षा का बहुत अधिक महत्व है।
- हमारे ग्रह को ग्लोबल वार्मिंग जैसे हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिए पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है।
- पर्यावरण संरक्षण सभी के सतत विकास के लिए आवश्यक है।

पर्यावरण की सुरक्षा हेतु योजना :– पर्यावरण संरक्षण का सभी प्राणियों के जीवन तथा इस धरती के सभी प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ संबंध है, और आने वाले भविष्य में मानव सभ्यता का अंत दिखाई दे रहा है। इस स्थिति को देखते हुए प्रथम बार सन् 1992 में ब्राजील में 174 देशों का "पृथ्वी सम्मेलन" आयोजित किया गया। इसके बाद 2002 में "जोहान्सबर्ग" में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित कर विश्व के सभी देशों के द्वारा "पर्यावरण संरक्षण" पर ध्यान देने के लिए अनेको उपाय एवं सुझाव दिए गए। क्योंकि पर्यावरण के संरक्षण से धरती पर जीवन का संरक्षण हो सकता है अन्यथा मंगल ग्रह आदि ग्रहों की तरह धरती का जीवन चक्र भी समाप्त हो जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता मूलतः इसलिए पड़ी क्योंकि सभी जीवधारी जानते हैं कि पर्यावरण प्रदूषण के कुछ दूरगामी दुष्प्रभाव होने लगे हैं, जो अति घातक हैं और पृथ्वी पर पाए जाने वाले जीवों को बचाने के लिए इसका संरक्षण अति आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में केंद्र सरकार द्वारा पारित किया गया और 19 नवंबर 1986 को लागू हुआ। इसमें 26 धाराएं और चार अध्याय हैं। इस अधिनियम को भोपाल गैस रिसाव की प्रक्रिया माना जाता है।

यह अधिनियम भारतीय संविधान के अनुच्छेद 253 के तहत पारित किया गया था, जो केंद्र सरकार को देश द्वारा हस्ताक्षरित अंतरराष्ट्रीय समझौते को प्रभावी करने के लिए कानून बनाने का अधिकार देता है। इस अधिनियम का उद्देश्य मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के निर्णयों को लागू करना है।

पर्यावरण संरक्षण की विधियां :– पर्यावरण प्रदूषण के कुछ दूरगामी दुष्प्रभाव हैं। जो बहुत घातक हैं जैसे आणविक विस्फोट से रेडियो धर्मिता का अनुवांशिक प्रभाव इसका प्रत्यक्ष उदाहरण "हिरोशिमा" है। वायुमंडल का तापमान बढ़ना, ओजोन परत की हानि, भू क्षरण आदि ऐसे घातक दुष्प्रभाव है।

प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव के रूप में जल, वायु तथा आसपास का परिवेश का दूषित होना एवं वनस्पतियों का नष्ट होना, मानव का कैंसर जैसी घातक बीमारियों के साथ साथ कई जानलेवा बीमारियों से पीड़ित होना आदि देखे जा रहे हैं। बड़े कारखाने से विषैला अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकलने से एवं प्लास्टिक आदि के कचरे से प्रदूषण की मात्रा दिनों दिन बढ़ती जा रही है।

ये प्रकृति हमारी है और इसने जीवों का पालन किया है, अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए हमें खुद ही जागरूक होना होगा। सबसे पहले तो अपनी मुख्य आवश्यकता "जल" को प्रदूषण से बचने के लिए हमें कारखाने का गंदा पानी, घरेलू गंदा पानी, नालियों में प्रवाहित माल और सीवेज लाइन का गंदा निष्कासित पानी समीप के नदियों और समुद्रों में गिरने से रोकना होगा। उपचारित करने के बाद ही उन्हें कहीं प्रवाहित करना उचित होगा जो पर्यावरण के लिए सही होगा जिससे जलीय जीवों की रक्षा भी होगी। अधिकतर देखा गया है कि इन प्रदूषित जल को सिंचाई के काम में लेते हैं जिससे उपजाऊ भूमि भी विषैली हो जाती है। और उसे भूमि में उगने वाले फल एवं सब्जियों के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।

यदि हम अपने आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ देखना चाहते हैं तो यह अति आवश्यक है कि बच्चों को पर्यावरण शिक्षा की समुचित ज्ञान समय–समय पर देते रहें। क्योंकि स्वास्थ्य ही धन है, जल के बाद है हवा, हम कितने शुद्ध हवा में जीवन जी रहे हैं यह तो हम भली–भांति समझते हैं। आज वायु प्रदूषण ने भी हमारे पर्यावरण को बहुत ही ज्यादा क्षति पहुंचाई है। माना कि आज मानव विकास के पथ पर अग्रसर है, परंतु बड़े–बड़े कल कारखानों की चिमनियों से उठने वाला गंदा धुआं, रेल व विभिन्न प्रकार के डीजल व पेट्रोल से चलने वाले वाहनों के पाइपों से निकलने वाली गैस, घरों और लघु उद्योग से निकलने वाला धुआं, जनरेटर से निकलने वाला कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन, सल्फ्यूरिक एसिड प्रतिक्षण वायुमंडल में घुलते जा रहे हैं। इससे बड़े पैमाने पर वायु प्रदूषण हो रहा है। सही

मायने में पर्यावरण पर हमारा भविष्य आधारित है, जिसकी बेहतरी के लिए ध्वनि प्रदूषण को भी ध्यान देना आवश्यक होगा। रोजमर्रा के वाहनों से निकलने वाली ध्वनि से लेकर शादी विवाह और बच्चों के जन्मदिन जैसे अन्य कार्यक्रमों में लगने वाले डीजे आदि ध्वनि विस्तारक के प्रयोग ने ध्वनि प्रदूषण को जन्म दिया है। इससे मानव की श्रवण शक्ति का ह्रास हो रहा है। ध्वनि प्रदूषण का मस्तिष्क पर भी घातक प्रभाव पड़ता है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण तीनों ही हमारे बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं। ऋतुचक्र का परिवर्तन, कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा का बढ़ाना, हिमखंड पिघलना, सुनामी, बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि या अनावृष्टि जैसे दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जिन्हें देखते हुए अपने बेहतर कल के लिए समस्त विश्व में 5 जून को "पर्यावरण दिवस" के रूप में मनाया जाता है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रकार :– जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, वन संरक्षण, वन्य जीव संरक्षण, तथा जैव विविधता संरक्षण ।

पर्यावरण संरक्षण के तरीके :–

जल संरक्षण :– जीतनी जरूरत है उतना ही पानी खर्च करें बरसात के पानी का संग्रह करें। घर में सोखता बनवाएं। साथ ही अपने आस पास के लोगों को पानी के दुरूपयोग से भविश्य में होने वाली समस्या के बारे में जागरूक करें।

मृदा संरक्षण :– मृदा अपरदन रोकने के लिए वृक्ष लगाए, पृथ्वी का महत्वपूर्ण तत्व वनस्पति और पेड़ पौधे हैं जो मिट्टी के कटाव को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पौधों के उत्पादन के लिए मिट्टी समृद्ध पोषक तत्वों से भरी होती है। खाद और जहरीले रसायनों के काम से कम उपयोग को सुनिश्चित करके और साथ–साथ मिट्टी के हानिकारक औद्योगीक कचरा को समाप्त करके मृदा संरक्षण किया जा सकता है।

वन संरक्षण :– हम जानते हैं कि पेड़ और पौधे हवा भोजन के साथ–साथ हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले अन्य दैनिक उत्पादों की आवश्यक स्रोत हैं। जंगल अनेक जीवों का निवास स्थान है। वन संरक्षण का उद्देश्य है कि अधिक से अधिक पेड़ लगाना और साथ ही मौजूद पेड़ को काटने से बचाना क्योंकि पेड़ पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वन्य जीव संरक्षण :– वन संरक्षण के साथ ही वन्यजीवों का संरक्षण भी जुड़ा है। जंगल रहेंगे तो वन्य जीव भी रहेंगे, वन्य जीवों की सुरक्षा व उनके आहार और देखरेख के लिए सरकार अनेक तरह के प्रोजेक्ट पर काम कर रही है। जैसे टाइगर रिजर्व प्रोजेक्ट, कस्तूरी मृग परियोजना, गिरी सिंह परियोजना, कछुआ परियोजना, घड़ियाल प्रजनन परियोजना और हाथी परियोजना इत्यादि।

प्रदूषण नियंत्रण :– हमें उन टॉक्सिक कंपाउडस (विषैला यौगिक) पर नजर रखने की आवश्यकता है। हर वह छोटी बड़ी चीज जिससे हमारा पर्यावरण विषैला होता जा रहा है, जो वातावरण को प्रदूषित करते हैं। हमें उत्सर्जन के कई रूपों को कम करने के लिए पर्यावरणीय रूप से अस्थाई तरीकों को अपनाने की जरूरत है। जैसे कचरे को कम करना, बिजली की बचत करना, उर्वरकों और कीटनाशकों के अनावश्यक उपयोग को सीमित करना और और ऊर्जा कुशल उपकरणों का उपयोग करना आदि।

निष्कर्ष :– विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति तथा नए–नए आविष्कारों की स्पर्धा के कारण आज का मानव प्रकृति पर पूर्णतः विजय प्राप्त करना चाहता है। इस कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। दूसरी ओर धरती पर जनसंख्या की निरंतर वृद्धि हो रही है। औद्योगिकरण और शहरीकरण की तीव्र गति से जहां प्रकृति के हरे–भरे क्षेत्र को समाप्त किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर प्रकृति के दोहन से इसमें रहने वाले सभी प्रकार के जीव जंतुओं के स्वस्थ जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा हैं। विभिन्न प्रकार के नए रोग सामने आ रहे हैं। अभी हाल ही में कोविड–19 जैसी महामारी का सामना करना पड़ा। हम जिस वातावरण में रहते हैं उस वातावरण की साफ सफाई का ज्ञान हमें खुद रखना होगा। हम जो भी प्रकृति से लेते हैं उसके बदले हमें कुछ देना चाहिए। परिवार में जैसे माता–पिता बच्चों का संरक्षण करते हैं, वैसे ही प्रकृति संपूर्ण सृष्टि को संरक्षण देती है। आज हमारी पृथ्वी हमारे ही बोझ से दब रही है। विकास की गति तो तेज हो गई परंतु जीवन की गति धीमी हो गई है। ऐसे में लोगों का पर्यावरण के प्रति जागरूक होना आवश्यक हो गया है। जन जागरूकता और जन भागीदारी बहुत जरूरी है लोगों को यह बताना होगा कि हमारे कौन–कौन से कार्य पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं और वे पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या–क्या कदम उठा सकते हैं।

वेस्ट मैनेजमेंट हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में जो कचरा निकालते हैं उनमें से कुछ कचरों का रीयूज करके हम कुछ गंदगी को कम कर सकते हैं खासकर विकासशील देशों में रोजाना बड़ी मात्रा में कचरा सड़कों पर फेंका जाता है इससे विभिन्न अनावश्यक बीमारियों के साथ–साथ मृदा प्रदूषण भी हो

सकता है हम चाहे तो 3 R का विकल्प चुन सकते हैं जैसे पुनः उपयोग और रीसाइकलिंग, सुखे और गीले कचरे को अलग करना। प्लास्टिक का इस्तेमाल जितना कम कर सकते हैं किया जाए क्योंकि इसका उपयोग जानलेवा है।

कोविड–19 जैसी बीमारी ने संपूर्ण विश्व को हिला कर रख दिया और पूरे विश्व को एक नई सीख दी मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता केवल रोटी, कपड़ा और मकान है।

विकास की राह पर चलते–चलते हम अपनी ही जीवन दायनी प्रकृति मां के कराह को नजर अंदाज कर रहे हैं। मनुष्य को अत्यधिक दिखावा करने के फलस्वरूप प्रकृति की ओर से यह भेंट है। यदि हम उसका ख्याल नहीं रखेंगे तो प्रकृति अपना संतुलन बनाए रखने के लिए हमें दंडित करती रहेगी। विश्व में पर्यावरण सुरक्षा को लेकर अनेक उपाय किए जा रहे हैं। गांव से लेकर शहरों तक की सफाई की समुचित व्यवस्था की गई है। परंतु सबसे अहम है जन चेतना आज 5 जून को पूरा विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाता है। महाविद्यालयों से एन.एस.एस और एन.सी.सी यूनीट के माध्यम समय–समय पर कार्यक्रमों का आयोजन कर बच्चों को पर्यावरण के प्रति सचेत किया जा रहा है। स्लोगन, कविता और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जन चेतना फैलाने का काम किया जा रहा है। आइए हम सब मिलकर संकल्प लें.....हम सब मिलकर प्रदूषण को मिटाएंगे और अपने पर्यावरण को स्वच्छ बनाएंगे।

"प्रदूषण हटाओ, पर्यावरण बचाओ"

संदर्भ :–

- https://hi.m.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%A3&wprov=rar1
- Dr. Mamoriya Chaturbhuj, Resource and Environment, Sahity bhavan publication.